स्वतंत्रता सेनानियों का स्वतंत्रता में योगदान

डॉक्टर शैलजा वासुदेवा,

असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान विभाग,

शहीद कैप्टन विक्रम बत्रा राजकीय महाविद्यालय पालमपुर, जिला

कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश, भारत

सरांष : स्वतंत्रता यानि आजादी। कहने में केवल एक शब्द है लेकिन व्यक्ति के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण अनुभूति। जिसे वह प्राप्त करना चाहता है स्वतंत्रता में जीना चाहता है। हमस ब में से कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा जो गुलामी की जिंदगी जीना चाहता हो। हमें छोटी छोटी पाबंदियां भी अंदर से झकझोर देती है। आज के समय में व्यक्ति को हर प्रकार की आजादी है, संविधान मे जीवन का अधिकार दिया गया है, हर प्रकार स्वतंत्रता का अधिकार मिला है ब"ार्ते जिससे किसी दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन न हो। हम में से कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा जिसने गुलामी के दर्द को महसूस किया हो। हम केवल उनकी कहानियों को पढ़ व सुन सकते हैं। इस स्वतंत्रता को पाने के लिए बहुत समय व संघर्ष लगा है। बहुत लोगों की जानें गई, बहुत से परिवार उजड़ गए। जितना समय भारत ने अपने आपको गुलामी की बेड़ियों से आजाद कराने में लगाया सोचो, अगर हम गुलाम न होते तो वह समय भारत खुद का विकास करने में लगाता। कितने वर्षों तक हमने गुलामी झेली व उसके बाद संघर्षो का दर्द झेला। स्वतंत्रता प्राप्ति में बहुत से महान व्यक्ति–जिन्होंने अपना सब कुछ त्याग दिया का योगदान रहा। उन व्यक्तियों का महान कहना हमारे लिए गर्व की बात है। व हमारा सौभाग्य है कि हमारे दे"ा के लिए लोगों ने यह महान कार्य किया। व पूरा दे"ा हजारों साल तक उन सब लोगों के आभारी हैं और रहेगा। बहुत से स्वतंत्रता सेनानी कैसे हैं जिनसे हम अज्ञात है जिनको इतिहास में दर्ज नहीं किया गया। उनका त्याग, बलिदान केवल चंद लोगों के ज्ञान में सिमट कर रह गया। और कुछ की कहानी इतिहास के पन्नों में दर्ज है। लेकिन भारतीयों के दिलों में असीम प्रेम और सम्मान की भावना प्रत्येक नागरिकों के हृदय में उन सेनानियों के प्रति है। जिनकी जयंती। पुण्यतिथि में दिवस भी घोषित किए जाते हैं। किसी वि"ोष दिन वि"ोष व्यक्ति की जयंती। पुण्यतिथि पर वि"ोष रूप से पूरे भारत के हर कोने में उस दिन उस व्यक्ति को याद किया जाता है। ऐसे ही सेनानियों की तपस्या व त्याग के बारे में मेरा यह शोध लेख विस्तृत व्याख्या कर रहा है ।

संकेत शब्द –उपनिवेशवाद, भारत, स्वतंत्रता संग्राम, स्वतंत्रता सेनानी, योगदान

प्रस्तावना : स्वतंत्रता सेनानी वे व्यक्ति होते हैं जो अपने स्वार्थ को तटस्थ करके दे"ा के हित में कार्य करते हैं। एवं जो अपने प्राणों की प्रवाह न करके अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए लड़ते हैं। इसी प्रकार भारत में भी अनेक स्वतंत्रता सेनानी हुए जिन्होंने अपनी मातृभूमि को ही अपना घर परिवार समझा। इनमें से कुछ स्वतंत्रता सेनानी ऐसे है जिनका नाम छप गया व कुछ का नाम छिप गया। स्वतंत्रता में बहुत से स्वतंत्रता सेनानी जो इतिहास के पन्नो में दर्ज है। मंगल पांडे, भगत सिंह, बाल गंगाधर तिलक, सुभाषचंद बोस, बिरसा मुंडा, डॉ राजेंद्र प्रसाद, सुखदेव, राजगुरू, खुदीराम बोस, महात्मा गांधी, लक्ष्मी सहगल, बेगम हजरत महल, रानी लक्ष्मीबाई, भीकाजी कामा, गुलाब कौर, सरोजनी नायडू, कमलोदवी चट्टोपध्याय, सरला देवी चौधुरानी, कस्तूरबा गांधी, एनी बेसेंट, उषा मेहता आदि एवं गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी अरूण आसफ अली, विरोट सिंग, पोटटी श्रीरामुलु, वेलु नचियार, तारा रानी श्रीवास्तव, राज कुमारी गुप्ता, तिरूपुर कुमारानी, सेनापति बापती, मातंगिनी हाजरा, अल्लूरी सीताराम राजू, कनैयालाल मानेकलाल मुं"ाी, पीर अली खान, गैरीमे सत्यानारायण, लक्ष्मी सहगल, दुर्गावाई दे"ामुख के मामेन, बसी बानो बेगम, पार्वती गिरि, कल्ला रंग, कन्नेगंती हनुमंथु, स्वयंभू बॉस, भोगे"वरी फुकानी, कनकलता बरूआ, दक्ष केवेर आदि।

लोग हमे"ाा इन सेनानियों की दे"ाभक्ति और अपने दे"ा के लिए लोग हमे"ाा इन सेनानियों की दे"ाभक्ति और अपने दे"ा के लिए प्यार के लिए उन्हें याद करते हैं। आज 15 अगस्त को हम स्वतंत्रता दिवस इन्हीं लोगों की बदौलत मना पाते हैं।

इनमें से बहुत से सेनानियों ने अन्य लोगों को अपनी स्वतंत्रता के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया। एवं कई आंदोलनों का नेतृत्व किया। एवं जनता को उनके मौलिक अधिकारों और शक्ति के बारे में जागृत किया। आज हम दिन–प्रतिदिन सांप्रदायिकता की नफरत को बढ़ावा दे रहे हैं जो हमारे लिए काफी शर्म की बात है हमस ब इन स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान को बेकार कर रहे हैं। हम सबको शांति से रहना चाहिए, एक दूसरे के प्रति सद्भावना रखनी चाहिए ताकि हम अपने राष्ट्र को सफल व समृद्ध बनाने में मदद कर सकें। व अपने सेनानियों के बलिदान व त्याग से सीख लेनी चाहिए। राष्ट्रधर्म की खातिर क्रान्ति की पहली गोली चलाने वाले को भले ही तोपों से उड़ा दिया गया हो लेकिन जो सिंगारी उन्होंने लगाई उस आग में तपकर निकले स्वाधीनता सेनानियों ने अपने अहिंसक आंदोलन से अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर मजबूर कर दिया। ऐसा ही जुनुन हम भारतीयों के अंदर दे"प्रेम के लिए होना चाहिए।

1857 की क्रान्ति :

1857 की क्रान्ति स्वतंत्रता के लिए लड़ी गई पहली क्रान्ति सिद्ध हुई। 1857 ई. की क्रान्ति ब्रिटि"ा शासन के खिलाफ एक अहम घटना थी। यह क्रान्ति 10 मई, 1857 ई. को उत्तर प्रदे"ा के मेरठ जिले से हुई जो बरेली, कानपुर, झांसी, अवध, कानपुर अदि स्थानों पर फैल गई। 1857 की क्रान्ति के राजनीतिक कारण, प्र"ाासनिक कारण, सामाजिक कारण। आर्थिक कारण, धार्मिक कारण, सैनिक कारण, तात्कालिक कारण थे। 1857 की क्रान्ति के समय भारत के गवर्नर जनरल चार्ल्स जॉन कैनिंग थे। 1857 की क्रान्ति का मुख्य कारण डलहौजी की साम्राज्यवादी नीति थी। जिसमें डलहौजी की बहुत से सिद्धान्तों जैसे गोद–निषेध सिद्धांत जिससे डलहौजी ने अनेक रियासतों को समाप्त कर दिया। डलहौजी के दुर्व्यवहार से भी जनता बहुत नाराज थी। उसके बाद प्लासी का युद्ध के बाद जब से अंग्रेजों का शासन स्थापित हुआ तब से अत्याचारों की सीमा भारतीयों पर बढ़ गई। और भरतीयों के मन में स्वतंत्रता प्राप्ति की ललक बढ़ गई। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज का मजाक उड़ाने में अंग्रेजों ने कोई कसर नहीं छोड़ी। इस कारण भारतीय लोगों को लगा कि हमारा समाज का अस्तित्व कहीं खो न जाए एवं इस कारण उन्होंने अंग्रेजों का विरोध शुरू किया। तथा अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का आर्थिक शोषण किया गया जिसका बहुत बुरा प्रभाव पड़ा एवं सभी लोग क्रोध की अग्नि में जल उठे व अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा लड़ा। एवं 1857 की क्रान्ति छिड़ गई जो आजादी के लिए लड़ी गई पहली लड़ाई मानी जाती है। यही से स्वतंत्रता सेनानियों व उनके संघर्षों की कहानी शुरू हो जाती है।

मंगल पांडे :

दे"ा के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी मंगल पांडे थे। जिन्होंने स्वतंत्रता की एक चिंगारी दी एवं वह चिंगारी फैलकर आग बन गई जो प्रत्येक भारतीय के मन में भड़की हुई थी। मंगल पांडे का जन्म 19 जुलाई 1827 को फैजाबाद के सुरूरपुर में हुआ था। हालांकि वे मूल रूप से यूपी के बलिया जिले के नगवा गांव के रहने वाले थे। 1849 में मंगल पांडे 18 साल की उम्र में बंगाल नेटिव इन्फैन्ट्री में सिपाही के तौर पर भर्ती हुए। 29 मार्च 1857 को मंगल पांडे ने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोला था। एवं 'मारो फिरंगी को' नारा देकर भारतीयों का हौसला बढ़ाया था। मंगल पांडे के विद्रोह करने की कुछ तात्कालिक वजह थी। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा भारतीय सैनिकों पर अत्याचार बढ़ रहा था लेकिन भारतीय सैनिकों को ऐसी बंदूकें दी गईं जिसमें बंदूक की नली में बारूद को भरकर कारतूस डालना पड़ता था उस कारतूस की चर्बी गाए व सूअर के मांस से निर्मित थी जिसे दांतों से खोलना पड़ता था। मंगल पांडे भी उस समय सैनिक थे उन्होंने इन कारतूसों का प्रयोग करने से मना कर दिया व इसके बाद मंगल पांडे को सेना से निकालकर उनकी बंदूकें छीन लीं गईं। उसी दौरान मंगल पांडे ने क्रोधित होकर एक अंग्रेज सैनिक पर गोली दाग दी, इस बीच किसी भारतीय ने उनका साथ नहीं दिया, अंग्रेजों के बीच घिरे होने के कारण मंगलपांडे ने अपने उपर भी गोली चला ली। हालांकि केवल दुर्घटनाग्रस्त हुए थे इस बीच अंग्रेज सैनिकों ने इन्हें पकड लिया और 6 अप्रैल 1857 को कोर्ट मा"ाल के बाद 8 अप्रैल को उन्हें फांसी के फंदे पर लटका दिया गया। और आजादी का विद्रोह फैलता चला गया।

तांत्याटोपे व रानी लक्ष्मी बाई :

तांत्याटोपे भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के प्रमुख सेनानायक थे व रानी लक्ष्मी बाई प्रथम स्वाधीनता संग्राम में पहली महिला क्रान्तिकारी थी। तांत्याटोपे का असली नाम रामचंद्र पांडरंगा व लक्ष्मीबाई का बचपन का नाम मनु था। तांत्याटोपे, रानी लक्ष्मीबाई के गुरू थे। तांत्या टोपे ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। तांत्याटोपे का जन्म 1814 ई. में हुआ। ये गांव नासिक के निकट पटौदा जिले में (महाराष्ट्र) में पैदा हुए थे। तांत्याटोपे 1858–1859 तक अंग्रेजों के विरूद्ध अपनी पूरी शक्ति के साथ लड़ते रहे। उनके पास तोपे व सैनिकों की हमे"ाा युद्ध में कमी रह जाती थी। ग्वालियर की पराजय के बाद तांत्याटोपे उबड़ खाबड़ भूभागों

में अंग्रेजी सेना का सामना बिना किसी युद्ध सामग्री के करते रहे। सीकर के युद्ध के बाद तांत्याटोपे के प्राण निकल गए। उन्हें वि"वासघात करके मारा गया। तांत्याटोपे व उनके तीन चार साथियों ने रनवर राज्य में पारोंण के जंगल में अपने मित्र मानसिंह के पास जाकर शरण ली। जहां 7 अप्रैल 1859 को टोपे को राजमानसिंह की साजि"ा के तहत मेजर मीड द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। फिर 18 अप्रैल 1859 को उन्हें शाम 5 बजे फांसी के तख्ते पर लटका दिया गया। इस प्रकार तांत्याटोपे ने कभी मुख नहीं मोड़ा, वे हमे"ाा डटकर अंग्रेजों का सामना करते थे। और यही सीख उन्होंने रानी लक्ष्मीबाई में भी डाल दी थी।

रानी लक्ष्मीबाई इस संग्राम में कूदने वाली प्रथम महिला थी। रानी लक्ष्मीबाई द्वारा लड़ी गई लड़ाईयां व उनकी बहादुरी हमे"ाा सभी के दिलों में एक छाप छोड़ जाती है। रानी लक्ष्मीबाई का जन्म 19 नवम्बर 1828 को का"ाी में हुआ था। मनु के पिता मोरोपंत तांवे बिठुर के पे"ावा साहब के यहां काम करते थे। पे"ावा साहब मनु (लक्ष्मीबाई) को अपनी बेटी की तरह रखते थे। नाना साहब व तांत्याटोपे के मार्गद"ान में लक्ष्मीबाई ने घुड़सवारी और तलवारबाजी बड़ी कु"ालता से सीख ली थी। 1842 में मनु का विवाह झांसी के राजा गंगाधर राव से छुआ था। कुछ समय प"चात मनु ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका कुछ समय बाद देहांत हो गया। इसके प"चात् मनु ने एक बालक को गोद लिया। फिर उनके पति की मृत्यु हो गई और राज्य प्रबंधन की जिम्मेदारी लक्ष्मीबाई पर उग गई। लक्ष्मीबाई में उसी वक्त ठान लिया था कि झांसी को वह अंग्रेजों के हवाले नहीं करेगी। अंग्रेज लोग दत्तक पुत्र को लक्ष्मीबाई का वारिस नहीं मानते थे व झांसी को अपने साम्राज्य में मिलाना चाहते थे। रानी को पैं"ान का आ"वासन भी अंग्रेजों द्वारा दिया गया। रानी लक्ष्मीबाई लक्ष्मीबाई ने अपनी बहादुरी का परिचय देते हुए अंग्रेजों से हार नहीं मानी। अपने पुत्र को पीठ पर बांधकर, घोड़े पर सवार होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी। तांत्याटोपे ने इसमें उनका साथ दिया और यह लड़ाई लंबे समय तक चली। कुछ समय बरद रानी कालपी के लिए खाना हो गई। वहां पहुंचने के बाद रानी लक्ष्मीबाई ने ग्वालियर के किले को जीत लिया। कुछ समय प"चात जनरल स्मिथ और मेजर रूल्स ने अपनी सेना के साथ पूरी ताकत से रानी लक्ष्मीबाई का पीछा किया व ग्वालियर पहुंच गया जहां भीष्ण युद्ध के बाद 18 जून 1858 को लक्ष्मीबाई मृत्यु को प्राप्त हो गई।

भगत सिंह :

मंगलपांडे की दी हुई चिंगारी को भड़काने का कार्य भगत सिंह ने पूरा किया। भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर 1907 को बंगा, पाकिस्तान में हुआ था। इनके पिता का नाम कि"ान सिंह था। 13 अप्रैल 1919 की जलियांवाला बाग हत्याकांड का उनके मन पर गहरा असर पड़ा। लाहौर के ने"ानल कॉलेज की पढ़ाई छोड़कर भगत सिंह ने 1920 में महात्मा गांधी द्वारा चलाए गए आंदोलन में भाग लिया। जो विदे"ाी सामानों के बहिष्कार के लिए था। 1921 में जब चौरा–चौरा हत्याकांड के बाद गांधी जी ने किसानों का साथ नहीं दिया तब भगत सिंह गांधी जी के साथ हो छोड़कर चंद्र"ोखर आजाद के नेतृत्व में गठित हुई गदर दल के हिस्सा बन गए। चंद्र"ोखर आजाद के साथ मिलकर 9 अगस्त 1925 को शाहजहांपुर से लखनऊ के लिए चली 8 नंबर डाउन पेसेंजर से काकोरी नामक छोटे से स्टे"ान पर सरकारी खजाने को लूट लिया। इस घटना को भगत सिंह, रामप्रसाद बिस्मिल, चंद्र"ोखर आजाद व अन्य क्रान्तिकारियों ने अंजाम दिया। यह घटना काकोरी कांड के नाम से प्रसिद्ध है। जिसे हाल की में योगी सरकार ने काकोरी ट्रेन एक"ान का नाम दिया। उसके बाद भगत सिंह ने राजगुरू के साथ मिलकर 17 दिसम्बर 1928 को लाहौर में अंग्रेज अफसर जे.पी. सांडर्स को मारा था। एवं भगत सिंह ने बटुके"वर दत्ता के साथ मिलक अलीपुर रोड़ दिल्ली में स्थित ब्रिटि"ा असेंबली के सभागार में अंग्रेज सरकार को जगाने के लिए बम फैंका। इसके बाद इन्हें दो साल जेल में रहना पड़ा व जेल में रहकर 64 दिनों तक भूख हड़ताल की। फिर 23 मार्च 1931 को उन्हें लाहौर की सेंट्रल जेल में फांसी पर लटका दिया।

गुमनाम स्वतंत्रता सेनानी :

सेनापति वापर : बाण्ट का जन्म 12 नवंबर 1880 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के परनेर शहर में ब्राह्मण परिवार में हुआ था। बापट जी को पूणे के उेक्कन कॉलेज में जहां वे अध्ययन करते थे, दो व्यक्तियों ने उनके मन में राष्ट्रवादी भावना को जाग्रत किया। और यह वह समय था जब पूणे में भयंकर प्लेग फैला था। बापट जी ने दादाभाई नौराणी द्वारा लिखित श्च्वअमतजल पद प्दकपं" पुस्तक को पढ़ा व दे"ा में अंग्रेजों द्वारा हो रहे आर्थिक शोषण के बारे में अवगत हुए। इसी दौरान भारत में ब्रिटि"ा शासन के खिलाफ दिए गए उत्तेजक भाषण और लंदन के इंडिया हाऊस से जुड़े होने के कारण उन्हें छात्रवृत्ति भी गवानी पड़ गई। क्योंकि वापट जी 1904 के बाद इंजीनियरिंग की पढ़ाई करने चले गए थे। जहां उनकी मुलाकात ट्ण्क्ण् सावरकर से हुई। फिर सावरकर जी की सलाह पर, बापट बम बनाने की तकनीक सिखने पेरिस चले गए थे। 1908 में फिर एक बम मैनुअल और दो पिस्तौलों से लैस होकर भारत आए। बापट जी, अंग्रेजों के वि☺ संघर्ष शुरू करने से पहले एक दे"ाव्यापी तंत्र बनाना चाहते थे, लेकिन उनकी इस बात पर गौर नहीं की गई। 1908 में अलीपुर बम कांड हुआ जिसके चलते इन्हें भूमिगत होना पड़ा लेकिन वे

बाद में गिरफ्तार कर लिए गए। 1920 में बापट जी ने किसानों की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। किसानों की भूमि और उनकी आजीविका को नुकसान पहुंचाने वाले, पूणे में टाटा कंपनी द्वारा निर्माण किए जाने वाले बांध के विरोध में 1921 से 1931 तक मुल"ाी सत्याग्रह का नेतृत्व किया। जिसके तहत इन्हें 7 साल की कैद हुई। और स्वतंत्रता दिलाने में इनका योगदान रहा।

मैडम भीकाजी कामा : भिकाजी कामा का जन्म 24 सितम्बर 1861 को पारसी परिवार में हुआ था। इनके पिताजी का नाम सोराबजी था। भीकाजी कामा के पति अंग्रेजों को भारत के लिए हितकारी समझते थे। एवं अंग्रेजों की संस्कृति से प्यार करते थे। इस बीच श्री कामा व श्रीमति कामा के बीच मतभेद के कारण थे। कुछ समय प"चात वे लंदन चली गई। अंग्रेजों ने उनसे वहां एक शर्त रखी कि वे किसी भी राष्ट्रवादी गतिविधियों में भारत जाकर भाग नहीं लेगी। जब तक वे इस वयान पर हस्ताक्षर नहीं करेगी तब तक उनकी भारत वापसी पर रोक लगा दी जाएगी। उन्होंने इस बात के लिए इन्कार कर दिया और यूरोप में निर्वासन में रही। इन्होंने भारतीय क्रान्तिकारियों की हर संभव मदद की। ब्रिटि"ा सरकार उन्हें रोकने में असफल रही और 22 अगस्त 1907 को मैडम भीकाजी कामा जर्मनी के स्टटगार्ट में विदे"ाी धरती पर भारतीय ध्वज फहराने वाली पहली व्यक्ति बनी।

कमलोदेवी चट्टोपाध्याय : कमलोदवी चट्टोपाध्याय एवं स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ–साथ सामाजिक कार्यकर्त्ता, कला, उत्साही राजनेता और नारीवादी थी। भारतीय संस्कृति पर छाप छोड़ने वाली अनोखी महिला थी। फिर भी इनके योगदान को बहुत कम याद किया जाता है। वह एक ऐसी शख्सियत थी जिसने भारतीय हस्त"िाल्प को पुनर्जीवित किया। कमलोदवी भारतीय महिलाओं और राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए एक दूत बन गई। उन्होंने नस्लवाद और राजनीतिक व आर्थिक समानता के लिए भी वकालत की। 1923 तक कमलादेवी ने गांधी के नक"ोकदम कपर चलते हुए, खुद को राष्ट्रवादी संघर्ष में शामिल कर लिया। राजनीतिक पद के लिए कमलादेवी दौड़ने वाली पहली महिला होने का अनूठा गौरव प्राप्त हुआ। स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने व योगदान देने का श्रेय, इन्हीं को दिया जाता है।

बिरसा मुंड़ा : बिरसा मुंडा को अंग्रेजों के खिलाफ आदिवासी समुदाय को लामबंद करने के लिए जाना जाता है। आदिवासियों के भूमि अधिकारों की रक्षा करने वाले कानूनों को लागू करने के लिए बिरसा मुंडा ने अंग्रेजों को बाध्य किया आदिवासियों को ब्रिटि"ा उत्पीडन से बचाने के लिए इन्होंने हर संभव प्रयत्न किए। इनका जन्म 15 नवंबर 1875 को बंगाल प्रेसीडेंसी (वर्तमान में झारखण्ड) के एक मुंडा परिवार में हुआ था। बिरसा मुंडा ने लोगों से टैक्स न देने की अपील भी की थी जिस कारण 1895 में इन्हें गिरफ्तार कर लिया था, वहीं जेल में इनकी मृत्यु 9 जून 1900 में हो गई थी।

कन्हैयालाल मानेकलाल मुंषी : ये भी एक स्वतंत्रता सेनानी थे वि"ोष रूप से भारत छोड़ो आंदोलन में इनकी सक्रिय भूमिका रही। ये भारतीय विद्या भवन के संस्थापक थे। ब्रिटि"ा शासन द्वारा जब भी उन्हें गिरफ्तार किया गया भारत के लिए उनके समर्पण और जूनून को भली भांति देखा गया।

नि"क"र्ा :

ऐसे ही न जाने कितने स्वतंत्रता सेनानियों ने हमें आजादी की भावना को महसूस करने की स्वतंत्रता दिलवाई। सभी स्वतंत्रता सेनानियों का जिक्र में अपने शोध लेख में शायद ही कर पाती। लेकिन हमारे मन और भारत के लोगों के हृदय में हर सेनानियों के लिए असीम प्रेम और सम्मान की भांवना हमे"ाा जीवित रहेगी। पूरा भारत अपने सेनानियों को हमे"ाा जीवित रखेंगे उनके शौर्य को जीवित रखेंगे और उनके नक"ो कदमों पर चलकर प्रत्येक भारतीय अपने दे"ा के लिए समर्पण व जुनून की भावना को सीखेगा व पीढ़ी–दस–पीढ़ी उनकी गाथा को सुनेगा और फैलाएगा जिनसे स्वतंत्रता सेनानियों का त्याग और बलिदान को भूला न जा सके, वह हमे"ाा जीवित रहना चाहिए। इसके लिए हम सबको मिलकर प्रयत्न करना होगा तभी हम इस कार्य को सम्पन्न कर कसते हैं।

Refrences:-

1) Hindi.the betterindia.com
2) www.jagran.com
3) https://www.its hindi:com>bhikm
4) https://www.m.bharatdiscovery.org>in
5) https://hindi. Feminisminindia.com
6) https://www.gst.hindi.com>kamla

7) https://www.prabhasakshi.com>
8) https://www.4 to 40 com>birsa-munda
9) https://hindi careerindia.com>10 kanhaiyalal Mneklal Munsh

तेजपाल सिंह धाम ''भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी Gyan Geeta Prakashan, Year 2018